ओम्

स्तुता मया वरदा वेदमाता। वेद

'वरदात्री वेदमाता की मैंने स्तुति की है।'

वर्ष १९९८-९९ और १९९९-२००० में वेद-संस्थान की गतिविधियाँ

सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ११० ०२७

ओम्

स्तुता मया वरदा वेदमाता। वेद

'वरदात्री वेदमाता की मैंने स्तुति की है।'

वर्ष १९९८-९९ और १९९९-२००० में वेद-संस्थान की विभिन्न गतिविधियाँ

प्रस्तावना : वेद-संस्थान की स्थापना वसंत-पंचमी, ५ फ़रवरी, १९४८ को अजमेर (राजस्थान) में 'वेदों के परवाने', योग-जीवनपद्धति के प्रतिपादक श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' ने की थी। इसी नाम से एक केन्द्र उन्होंने १४ जून, १९५९ को दिल्ली में स्थापित किया था। यह केन्द्र ऐक्ट २१ (१८६०) के अधीन १४ जनवरी, १९६० से पंजीकृत है। संस्थान के लिए दान देने पर दाता को आयकर एक्ट १९६१ की धारा ८०जी के तहत कर-रियायत प्राप्त है। वेद, वेदभाषा–संस्कृत और वैदिक संस्कृति (योग-जीवनपद्धति), वेद संस्थान के उद्देश्य हैं।

१ अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती वैदिक शिक्षा केन्द्र

(अ. दू. वै. शि. के.)

वेद-संस्थान का लक्ष्य वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहित करना है। इस दिशा में संस्थान ने एक नवीन विराट् उपक्रम का संकल्प किया है। यह उपक्रम है आम जनता को घर-बैठे, वेदों के अध्ययन के लिए पठनीय सामग्री सुलभ कराना। इस कार्य के लिए संस्थान ने एक 'अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा केन्द्र' आरम्भ किया है। यह केन्द्र जनता की भाषा में, सरल से सरल शैली में, और आधुनिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में वेद को प्रस्तुत करने के पावन दायित्व का निर्वाह करने का यत्न करेगा। इसके लिए कुछ सर्टिफ़िकेट पाठ्यक्रम और डिप्लौमा पाठ्यक्रम आरम्भ किए जाने हैं। इनका ब्यौरा निम्न प्रकार है–

१ कुछ अल्पावधिक *सर्टिफ़िकेट* पाठ्यक्रम (वेद, वेद विज्ञान, वैदिक ज्योतिष, वैदिक पर्यावरण, वैदिक मंत्रचिकित्सा, वैदिक वास्तुशास्त्र, जैसे विषयों पर)

२ वेद में स्नातकोंत्तर (पूर्वार्ध) स्तर का, एकवर्षीय *डिप्लौमा (पी जी डी वी I)*

३ वेद में स्नातकोत्तर (उत्तरार्ध) स्तर का, एकवर्षीय *प्रगत (एडवांस्ड) डिप्लौमा (पी जी डी वी II)*

४ प्राचीन विलुप्त अनेक वैदिक विद्याओं पर विशिष्ट अध्ययन हेतु सर्टिफ़िकेट पाठ्यक्रम
५ प्राचीन भारतीय भाषाओं (संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश) के अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम
६ पाठ्यक्रमों को इंटरनैट पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था

प्रत्येक **सर्टिफ़िकेट** पाठ्यक्रम में दो प्रश्नपत्र होंगे। सर्टिफ़िकेट/डिप्लौमा के प्रत्येक प्रश्नपत्र में लगभग १६ पाठ होंगे। अध्यापन पत्राचार माध्यम से होगा। साथ ही, अध्येताओं के लिए संपर्क कक्षाएं लगाई जाएँगी। अध्यापन में हिन्दी और अथ वा अंगरेज़ी का प्रयोग किया जाएगा।

पाठ्यक्रमों की प्रासंगिकता : भारत के पास वेद-रूपी एक महान् सांस्कृतिक धरोहर है जो अखिलमानवता-परक, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ही नहीं हैं, वरन् वे मनुष्य-जाति के महतो-महान्, सिद्ध, आप्त पुरुषों के उन सर्वांगीण अनुभवों के भंडार हैं जो जीवन के प्रत्येक पक्ष की सब समस्याओं और जिज्ञासाओं के सर्वतोमुखी समाधान युग-युगों से देते रहे हैं और सदा देते रह सकते हैं। आवश्यकता है, उसके अध्ययन और अध्यापन की।

वेद में रुचि रखने वाले, देश-विदेश के नर-नारी अपने अवकाश के क्षणों में, बिना किसी अध्यापक की सहायता के, अपने वेदाध्ययन के लिए वेदों के पाठ डाक/इंटरनैट द्वारा समय समय पर प्राप्त करते रहेंगे। प्रत्येक पाठ्यक्रम की पूर्ति पर अध्येता को डिप्लौमा/सर्टिफ़िकेट प्रदान किया जाएगा।

यत्न रहेगा कि देश-विदेश के 'खुला विश्वविद्यालय' कोटि के शिक्षण-संस्थानों से इन पाठ्यक्रमों के लिए मान्यता प्राप्त की जाए ताकि इनकी आजीविका-परक अतिरिक्त उपयोगिता हो जाए।

पाठ्यक्रमों की तात्कालिक उपयोगिता : ऊपर लिखे कोर्स निम्न लिखित श्रेणियों के व्यक्तियों के लिए बहुत उपयोगी होंगे–

(अ) जो वेदों का सार-रूप, साथ ही प्रामाणिक परिचय प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए वेद का **सर्टिफ़िकेट** पाठ्यक्रम सुलभ होगा, भले ही वे संस्कृत न जानते हों।

(आ) जिन लोगों की वेद के पक्ष-विशेष को जानने की इच्छा है वे **सर्टिफ़िकेट** पाठ्यक्रमों द्वारा अपनी जीवन-शैली को सुधार सकेंगे और इस विद्या को एक अच्छे धंधे के रूप में भी उपयोगी पाएंगे।

(इ) जो संस्कृत जानते हैं और अब वेदों का विस्तृत और गहन अध्ययन करना चाहते हैं उनके लिए **डिप्लौमा** पाठ्यक्रम होंगे। ऐसे अध्येता वेद में स्नातकोत्तर स्तर की उपाधि-योग्यता प्राप्त कर लेंगे।

(ई) पुरोहित कार्य करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए निम्न लिखित पाठ्यक्रम उपयोगी रहेंगे–

१ पहले से ही पुरोहित कार्य में लगे हुए व्यक्तियों के लिए वेद में **डिप्लौमा I,** जिससे वे वेद में अपनी अतिरिक्त योग्यता बनाकर अपने को अधिक प्रभावी पुरोहित प्रमाणित कर सकेंगे।

२ नए पुरोहित बनने वालों के लिए वेद में **डिप्लौमा I,** जिससे वे पुरोहित के रूप में अधिक प्रभावी हो सकेंगे।

३ पुरोहित कार्य में लगे सभी व्यक्तियों के लिए **डिप्लौमा I और II,** जिनसे वे एक प्रौढतर पुरोहित बन सकेंगे।

वित्तीय पक्ष : 'केन्द्र' को स्वावलंबी बनने में तीन वर्षों का कार्यकाल लगने का अनुमान रखें तो इसके आरंभिक तीन वर्षों का वित्तीय विश्लेषण इस प्रकार है–

आरंभिक, मूल व्यय	७.१५ लाख रु
पुनरावर्ती व्यय	१३.५४ लाख रु
कुल पावती	४.३६ लाख रु
वास्तविक देयता	१६.३३ लाख रु

'केन्द्र' की इस परियोजना की क्रियान्विति में अभी तक लगभग रु १,००,०००/– व्यय किया जा चुका है। जैसे-जैसे तन-मन-धन-जन के अधिकाधिक साधन सुलभ होंगे वैसे वैसे पाठ्यक्रम यथाशीघ्र प्रसारित हो सकेंगे।

सर्वप्रथम आरंभ किए जाने वाले पाठ्यक्रम : 'केन्द्र' सर्वप्रथम निम्न लिखित पत्राचार पाठ्यक्रम आरम्भ करने की तैयारी में लगा हुआ है–

१ छह महिने का, **वेद** पर *सर्टिफ़िकेट* पाठ्यक्रम

२ छह महिने का, **वैदिक-मंत्रचिकित्सा** पर *सर्टिफ़िकेट* पाठ्यक्रम

३ छह महिने का, **वैदिक-पर्यावरण** पर *सर्टिफ़िकेट* पाठ्यक्रम

४ एक वर्ष का, **वैदिक वाङ्मय** में *डिप्लौमा I* पाठ्यक्रम

संस्कृत, पालि और वैदिक ज्योतिष पर छह छह महिनों के सर्टिफ़िकेट पाठ्यक्रमों का लेखन भी चलरहा है।

पाठ्यक्रमों की बुनावट: वेद पर *सर्टिफ़िकेट* पाठ्यक्रम में चारों वेदों से लगभग १०० मंत्र चुने गए हैं। ऋग्वेद के प्रत्येक मंडल का और प्रत्येक मंडल के प्रमुख-प्रमुख ऋषियों का कोई न कोई मंत्र चयन में रखा गया है। यजुर्वेद के अध्यायों और अथर्ववेद के कांडों में से यथाशक्य प्रत्येक से कंडिका या मंत्र लिया गया है। सामवेद के अधिकतर मंत्र ऋग्वेद में मिलते हैं; उन्हें छोड़कर, उन मंत्रों में से चयन किया गया है जो आजकल ऋग्वेद में नहीं मिलते हैं।

वेद पर *डिप्लौमा* पाठ्यक्रम में निम्न प्रकार विषय होंगे–

डिप्लौमा I : प्रथम प्रश्नपत्र	:	वैदिक संस्कृति और सभ्यता (आचार-विचार) के तत्त्व
द्वितीय ''	:	वैदिक साहित्य का इतिवृत्त
तृतीय ''	:	वैदिक वाङ्मय I : ऋग्वेद का परिचय और उससे चुनीदा अंश
चतुर्थ ''	:	वैदिक वाङ्मय II : यजुः, साम, अथर्व वेदों का परिचय और उनसे चुनीदा अंश
डिप्लौमा II: प्रथम प्रश्नपत्र	:	यजुर्वेदीय ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषदें
द्वितीय ''	:	इतरवेदीय '' '' ''
तृतीय ''	:	वेदांग और पूर्वमीमांसा
चतुर्थ ''	:	किसी ऋषि-विशेष के दर्शन का अनुशीलन (जैसे, मधुच्छन्दाः और उनके वंश द्वारा दृष्ट सूक्त)

केन्द्र और पाठ्यक्रमों की अधिक जानकारी के लिए और पाठ्यक्रमों हेतु अपना नाम नोट कराने के लिए पत्राचार आमंत्रित है।

२ वेद-स्वयंशिक्षण पाठों का लेखन

चारों वेदों के समस्त (लगभग १६,०००) मंत्रों के स्वयं-अध्ययन हेतु पाठ वेद-संस्थान में लिखे जारहे हैं ताकि बिना किसी अध्यापक की सहायता के, हिन्दी-भाषी साधारण जन, जो भले ही संस्कृत न जानते हों, स्वयं ही वेदाध्ययन कर सकें। सन् १९९३ से संस्थान में चलरही वेद-कक्षा में जन-साधारण को वेद पढ़ाने के अनुभव से वेदाध्ययन की जिस नवीन शैली का विकास हुआ है उसी शैली में ये पाठ लिखे जारहे हैं।

अभी तक ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के पाठों के अतिरिक्त, प्रथम और तृतीय मंडलों के कुछ सूक्तों के और सभी वेदों के अनेक स्फुट सूक्तों और मंत्रों के पाठ बन गए हैं। ऐसे मंत्रों की संख्या इन पंक्तियों को लिखने तक लगभग १५०० है।

३ चतुर्वेद-संहिता

(शब्दार्थ-और-अन्वितार्थ युक्त, सूक्त-सार सहित)

मूल वेद-संहिता के मंत्रों के प्रत्येक शब्द को एक पृथक् इकाई मानकर, मंत्रपाठ के नीचे ही प्रत्येक शब्द का तटस्थ शाब्दिक अर्थ दे देना, फिर मंत्र का तटस्थ अन्वय करके अन्वितार्थ देना, सूक्त के अंत में सूक्त के अभिप्राय पर एक टिप्पणी देना– इस विधि से वेद-संहिता का प्रकाशन हो जाने पर, संस्कृत न जानने वाले, साधारण जन

की पहुंच में भी वेद का अर्थ और अभिप्राय लाया जा सकेगा। मात्र पारायण कर पाने वाले लोग भी वेद को बहतर समझ सकेंगे। बिना खींचतान का, तटस्थ अर्थ उन्हें सुलभ होने से, विभिन्न व्याख्याकारों की व्याख्याओं को पढ़ते हुए वे यह विवेक कर सकेंगे कि व्याख्या के बहाने से व्याख्याकार ने अपने पूर्वाग्रह को तो कहीं मंत्र पर थोप नहीं दिया है।

(संस्थान में वेदमंत्रों के जो पाठ बनाए जारहे हैं उनमें यह अंश भी सम्मिलित होता है।)

४ वैदिक अनुशीलन कार्य

वेद-संस्थान में किए जारहे वेदों के अनुशीलन में निम्न लिखित दृष्टिकोणों को संमुख रखा जारहा है–

१ मंत्र का अध्ययन तटस्थ मनोवृत्ति से करना ताकि मंत्र के कथ्य पर अध्येता के पूर्वाग्रहों का भार न पड़े। मंत्र 'स्वयं' जो कहना चाहता है उसे सुनने की नीयत रखना, न कि अपने पूर्वनिर्धारित मत को मंत्र में से निकालने की खींचतान करना।

२ वैदिक सूक्तों के उस केन्द्रीय विचारबिन्दु की खोज करना जिसके परितः किसी भी सूक्त का ब्यौरेवार कथ्य संगत होता है। (यह दृष्टिकोण संस्थानाध्यक्ष श्री डॉ *अभयदेव शर्मा* की लेखनी के द्वारा अनेक वर्षों पूर्व, संभवतः सन् १९७४ में, कुरुक्षेत्र में हुए अ. भा. प्राच्यविद्यासंमेलन के चुनीदा निबंधों के संग्रह-ग्रन्थ में सम्मिलित होकर, विद्वानों के समक्ष आ चुका है।)

३ वैदिक कोष 'निघण्टु' में दिए गए विशिष्ट वैदिक शब्दों के 'पारिभाषिक' प्रतीत होने वाले अर्थों को मंत्र-व्याख्या में संगत करने का यत्न करना।

४ वेदों के मुख्य प्रतिपाद्य– १. देवस्तुति द्वारा देवविशेष के स्वरूप पर फ़ोकस रखना और २. देवों को आत्मा के विभिन्न पक्ष-विशेष मानते हुए वैदिक आचार-विचार के विराट् क्षितिज को प्रस्तुत करना जिसमें व्यष्टि और समष्टि, अध्यात्म और लोकमंगल समन्वित हो जाते हैं और गौण रूप से नैतिक शिक्षाएँ भी पदे-पदे मौजूद मिलती हैं।

५ वेद के 'विज्ञान' पक्ष (या सृष्टिविद्या और 'भौतिक' विज्ञान के संकेतों) को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करते हुए उसे समझने का यत्न करना।

६ आधुनिक परिप्रेक्ष्य और समस्या के समाधान भी गौण रूप से मंत्रानुशीलन से प्राप्त हो जाना।

७ मंत्र में प्रयुक्त शब्दों के, अन्य मंत्रों में आए, प्रयोगों पर ध्यान रखते हुए मंत्रव्याख्या की वेद से ही प्राथमिक पुष्टि प्राप्त करना। इसके लिए किसी ऋषि-विशेष के दृष्ट सूक्तों को 'एक' इकाई मानना।

८ मंत्र-विशेष की व्याख्या करते समय चिंतन का फ़ोकस मंत्र पर ही रखना (अर्थात्, चिंतन के समर्थन या तुलना हेतु प्रमाणों की भरमार न करना) ताकि मंत्र का 'कथ्य' पूरी तौर से उजागर हो सके।

५ 'विद्यावारिधि' हेतु संबद्धता : वेद-संस्थान 'विद्यावारिध्रि' (पीएच डी) के लिए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान से संवद्ध है। वर्ष १९९८-९९ में एक अन्वेपक ने संस्थान के पंजीकृत विद्यार्थी के रूप में अपना शोधनिबंध रा.-संस्कृत-सं. को प्रस्तुत किया।

६ वेद-कक्षा : ५ वर्षों से प्रति-सप्ताह शनिवार को सायं वेद-कक्षाएँ संस्थान में लगाई जाती रही हैं। यह अध्यापन इस दृष्टि से है कि जो संस्कृत नहीं जानते वे भी वेदमंत्र का अध्ययन कर सकें। संस्कृत न जानना वेदानुशीलन में बाधा न बनने पाए, इस दृष्टि से जितना भी न्यूनतम भाषाबोध मंत्रानुशीलन हेतु अपेक्षित है वह मंत्राध्यापन करते हुए ही सरल शैली में करा दिया जाता है। पदपाठ जैसा क्लिष्ट माना जाने वाला विषय भी सरलतया अध्येताओं को अधिगत हो जाता है। कुछ छात्र तो पदपाठ से संहितापाठ तक बनाने लगे हैं। वेदकक्षा की यह एक महत्त्वपूर्ण और मौलिक देन है। दिल्ली के महाविद्यालयों के कई संस्कृत प्राध्यापक और अन्य प्रबुद्ध नागरिक तथा विद्वान् इस पद्धति को देखने हेतु समय समय पर आते रहे हैं। वेदकक्षा की यह पद्धति महाविद्यालयों और गुरुकुलों में वेदाध्यापन हेतु भी बराबर उपयोगी है, यह स्वयं संस्कृताध्यापकों का मत है। संस्थानाध्यक्ष श्री डॉ *अभयदेव शर्मा* अध्यापन करते हैं। अनेक नर-नारी बड़ी रुचि से वेदकक्षा में भाग लेते हैं। कुछ तो काफ़ी दूरी से इसमें सतत आते हैं। इस पद्धति से दिल्ली के बाहर भी अनेक नगरों में वेदकक्षाएं लगाई गई हैं। सर्वत्र जनता को यह पद्धति पसंद आई है। एक वेद-मंत्र का अध्यापन दो शनिवारों में पूरा हो पाता है; एक बार में मंत्र के बहिरंग (भाषा, छंद, पदपाठ, आदि) का अध्यापन कराया जाता है और अन्य शनिवार को मंत्र की व्याख्या की जाती है। जनसाधारण को वेद पढ़ाने की एक स्वोपज्ञ और मौलिक रूपरेखा और पद्धति का विकास वेदकक्षा के बहाने से हो गया है। इसी पद्धति से चारों वेदों के सब मंत्रों के स्वाध्ययन और अध्यापन हेतु पाठ लिखने का कार्य संस्थान में चलरहा है। इस पद्धति से वेद के अध्यापक तैयार करने की स्थिति में अब वेद-संस्थान आ गया है।

चालू वर्ष में वेदकक्षा के द्वितीय बैच में 'ईशोपनिषत्' का अध्यापन पूरा किया गया। कक्षा के प्रथम और द्वितीय बैचों में गत वर्षों में वेदों के चुनीदा सैकड़ों मंत्रों का अध्यापन हो चुका है।

७ संस्कृत-कक्षा : संस्कृत न जानने वालों के लिए संस्कृत-कक्षाएं प्रति सोम और बुध वारों को पूर्वाह्न में लगाना दिसंबर, ९८ से आरम्भ किया गया। संस्कृत के अध्यापन की एक नई ही पद्धति का क्रमिक विकास इन कक्षाओं में होरहा है। अध्येताओं में संस्कृत जानने की काफ़ी रुचि है।

८ 'विदेह'-साहित्य (ग्रन्थावली): १५ भागों में : वेद-संस्थान के संस्थापक, श्री स्वामी 'विदेह' ने लगभग ३० वर्षों तक वेद, योग और सम-सामयिक विषयों पर सतत लेखन और प्रवचन किए थे। वस्तुत: उनका चिंतन और वेदानुवादलेखन तो उससे पूर्व भी, लगभग २७ वर्षों से, चलरहा था। उनका संपूर्ण ऋग्वेद का अनुवाद और कुछ स्फुट रचनाएँ तो अभी तक अप्रकाशित ही हैं। लगभग ५७ वर्षों की अवधि में उन्होंने जो लेखन किया है और उनके प्रवचनों के जो कुछ टेप संस्थान में सुरक्षित हैं उनको यदि एक ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित किया जाए तो लगभग १५ भाग तो विषयानुसार बनेंगे ही, अधिक भी बन सकते हैं। इनमें से ८ भाग तो संभवत: केवल वेद-विषयक लेखन के होंगे। अन्य भाग क्रमश: निम्न प्रकार सोचे जा सकते हैं,

भाग	विषय
१ से ८	वेद
९	गीता
१०	नैतिकता
११	समाज
१२	अध्यात्म
१३	गीत ('विदेह'-रचित)
१४	प्रकीर्ण
१५	आत्मकथन

ग्रन्थावली के संपादन में कम से कम दो व्यक्तियों की टोली को संपादन और प्रैस कॉपी तैयार करने में एक वर्ष लग सकता है। प्रति-तिमाही एक खंड के प्रकाशन के अनुपात से प्रकाशन में लगभग चार वर्ष और लग सकते हैं। यह सब जन-धन की उपलब्धि पर निर्भर करेगा।

९ पुनर् मुद्रण : (१) श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' द्वारा रचित लोकप्रिय पुस्तिका, 'महामृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान' के नवीन सप्तम संस्करण का मुद्रण श्रीमती संतोष कपूर (नई दिल्ली) ने अपने पावन दान से कराया। (२) एक अन्य संस्थान-हितैषी माता ने श्री स्वामी 'विदेह' की अन्य कृति, 'जीवन-संविधान' का द्वितीय संस्करण अपने पवित्र दान से मुद्रित कराया है। इसमें यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय, 'माध्यंदिनी ईशोपनिषत्' की व्याख्या है जो मुद्दत से अनुपलब्ध थी। (३) 'वेदालोक (प्रथम भाग)' का पुन: प्रकाशन अभी हाल में किया गया है।

श्री स्वामी जी, श्री डॉ फ़तहसिंह, श्री डॉ अभयदेव शर्मा द्वारा रचित कुछ अन्य पुस्तकों का भी पुनर् मुद्रण होना है, जिनकी सूची नीचे दी जारही है-

उत्तम स्वभाव; गीतायोग; चरित्रनिर्माण; तपोयाग; मानवता को वेदों की देन; विदेह-गीतांजलि; वेदमाता; वेदाध्ययन कैसे करें?, वैदिक बालशिक्षा (चारों

भाग एक संकलन में), वैदिक बालशिक्षा (द्वितीय भाग), वैदिक बालशिक्षा (तृतीय भाग), वैदिक साधना, संस्कृत-शिक्षा (प्रथम भाग), संस्कृत-शिक्षा (द्वितीय भाग), संस्कृत-स्वयंशिक्षक (द्वितीय भाग), स्वस्तियाग।

पुनर् मुद्रण और नवीन मुद्रण जैसे कार्य श्री **श्रीपाल मंगल** (विशाल एन्क्लेव, नई दिल्ली) के निर्देशन में सुचारु रूप से होरहे हैं।

१० अनुवाद कार्य : श्री स्वामी 'विदेह' द्वारा रचित, वेद-संस्थान के, अनेक प्रकाशनों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद अनेक लोगों ने स्वान्त:सुखाय करके समय समय पर प्रकाशित किए हैं। उड़िया, असमी, बंगला, आदि भाषाओं में ये अनुवाद हैं। तीन प्रकाशनों के अंगरेज़ी में अनुवाद वेद-संस्थान से प्रकाशित हैं। कुछ ग्रन्थों के अंगरेज़ी-अनुवाद किए जा चुके हैं और यथासमय प्रकाशित किए जाने हैं, जैसे, **उत्तम स्वभाव, गीतायोग, चरित्रनिर्माण, मानवधर्म, योगालोक, वैदिक बालशिक्षा (प्रथम भाग)।**

अभी हाल में श्री **सीतारामदास** (आंध्र प्रदेश) ने तेलुगु में **'वेदालोक'** के दोनों भागों का अनुवाद पूरा किया है और अब वे **'वेदों की सूक्तियाँ'** का तेलुगु में अनुवाद कररहे हैं।

श्री स्वामी जी के ग्रंथों के देश-विदेश की भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित होने से वेद और अध्यात्म के पक्ष को बहुत बल मिलेगा। अंगरेज़ी में अनुवादों की तो काफ़ी मांग है भी।

११ वेद-गोष्ठी निबंधों का प्रकाशन : वेद-संस्थान में सन् १९८६ से सन् १९९७ तक कुछ वार्षिक गोष्ठियाँ वैदिक विषयों पर आयोजित की गई थीं। उनमें प्रस्तुत हुए निबंधों के कुछ संकलन विभिन्न प्रकाशकों ने प्रकाशित किए हैं। एक संकलन अभी सितंबर, १९९९ में प्रकाशित हुआ है। ब्यौरा निम्न लिखित है–

१. **वैदिक चिन्तन** (वसिष्ठ, वसु, रुद्र, अदिति-आदित्य विषयक निबंध): १९९०; परिमल पब्लिकेशन्स्, २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली ११० ००७; रु १५०/-
२. **वैदिक मरुत :** १९९०; नाग पब्लिशर्स्, ११ ए/यूए, जवाहरनगर, पोस्ट ऑफ़िस बिल्डिंग, दिल्ली ११० ००७; रु २००/-
३. **अथर्ववेदीय पृथिवी-सूक्त :**
४. **भाववृत्तसूक्तचतुष्टय :** १९९६; जे॰ पी॰ पब्लिशर्स, २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली ११० ००७; रु ....
५. **विश्वे देवाः :** १९९९; जे॰ पी॰ पब्लिशर्स, २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली ११० ००७

१२ आचार्य-प्रशिक्षण केन्द्र : वेद-संस्थान की स्थापना के पीछे श्री स्वामी 'विदेह' की मौलिक योजना वस्तुत: एक वेद-विश्वविद्यालय की थी। इसे उन्होंने

वेद-संस्थान के १०-सदनीय कार्य-विभाजन में 'अंगिरा-सदन' नाम से रखा था। वेद-विश्वविद्यालय, वस्तुत:, उनके चिन्तनानुसार एक 'अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म विद्यालय' होना है जिसमें विभिन्न धर्मों और भाषाओं के धुरन्धर विद्वानों और विदुषियों को, नास्तिक-आस्तिक, वैदिक-अवैदिक के भेदभाव को चित्त में न लाते हुए, प्रवेश दिया जाना है। उन्हें पांच वर्षों की शिक्षणावधि में विभिन्न धर्मग्रन्थों के साथ वेद का तुलनात्मक अनुशीलन कराया जाएगा। वेद-विश्वविद्यालय का प्रयोजन सार्वभौम मानवता की स्थापना के लक्ष्य से वेद और संस्कृत का प्रचार-प्रसार और मानवों में योग-जीवनपद्धति का समंकन कराना होगा।

यह सब कार्य 'वेदकक्ष' के नाम से होना है, तो वेद-विश्वविद्यालय में एक 'पुरोहित-कक्ष' भी होगा जिसमें 'तेजस्वी' वैदिक पुरोहितों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। संस्थान ने वेद-विश्वविद्यालय की श्री स्वामी जी की कल्पना को मूर्त रूप देने हेतु 'आचार्य-प्रशिक्षणकेन्द्र' नाम से एक प्रकल्प तैयार किया है जिसमें आरंभिक व्यय (आदिम छह मासों में) रु. सात लाख होने का अनुमान है। तत्पश्चात् वार्षिक व्यय भी लगभग इतना ही होगा। इसकी क्रियान्विति (जन-धन रूप) साधनों की उपलब्धि पर निर्भर रहेगी।

१३ मंगलकामना-यज्ञ ('विजय-याग') और 'वेदामृत' सत्संग :

'विजय-याग' की विधि श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' ने तब बनाई थी जब भारत पर सन् १९६२ में उत्तर दिशा से पड़ौसी देश ने आक्रमण किया था। ''विजय-याग' शीर्षक से यह मंत्रसंग्रह-परक पुस्तक संस्थान से प्रकाशित है। हर पहली तारीख़ को नव मास में सफलता की कामना से 'विजय-याग' करने का प्रचलन अनेक परिवारों में अरसे से है। इस क्रम को फ़रवरी; '९८ से वेद-संस्थान में भी आरंभ किया गया था । तब से प्रत्येक मास की पहली अंगरेज़ी तारीख़ को वेद-संस्थान की यज्ञशाला में प्रात: 'मंगलकामना-यज्ञ' के रूप में 'विजय-याग' होता है।

मंगलकामना-यज्ञ का आर्त्विज्य श्री *वीरेन्द्र*, शास्त्री, एम, ए, बी एड (दिल्ली प्रशासन में अध्यापक) करते हैं। 'याग' के अनन्तर वेद-संस्थान के अध्यक्ष श्री डॉ *अभयदेव शर्मा* के वेदमंत्र व्याख्यापरक प्रवचन 'विजय' की भावना की पृष्ठभूमि के साथ होते हैं। आजकल क्रमश: 'विजय-याग' के मंत्रों पर प्रवचन चलरहे हैं। दीपावली से होली तक समय प्रात: ७.०० से ८.४५ बजे और शेष मासों में ६.४५ से ८.४५ रहता है। यह आयोजन लोकरुचि का सिद्ध हुआ है। अनेक लोग मास-विशेष में आने वाले विशेष अवसरों के निमित्त से भी मंगलकामना-यज्ञ में यजमान बनते हैं, जैसे, जन्मदिन, विवाह-वर्षगांठ, बरसी, आदि। प्राय: ५-७ कुंडों में प्रतिमास 'याग' होता है। इस आयोजन की प्रचारसचिव-द्वय श्रीमती *विजयलक्ष्मी वर्मा* और श्रीमती *रीटा मदान* हैं और यज्ञव्यवस्थापक श्री *कुँवरभानु क्षेत्रपाल* और श्री *संजीव सेठी* हैं।

१४ अध्यक्ष द्वारा प्रवचन : संस्थानाध्यक्ष, श्री डॉ अभयदेव शर्मा को विशेष अवसरों पर वेदप्रवचनों के लिए नि-मंत्रित किया जाता है। स्थानिक धार्मिक संस्थाओं के अलावा, उनके विशिष्ट भाषण 'रक्षा शारीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान', दिल्ली में हुए। सुन्दरनगर (ज़ि० मंडी, हिमाचल प्रदेश), पंचकूला (ज़ि० अंबाला, हरयाणा) में भी उनके सप्ताहावधिक वेदप्रवचन हुए।

१५ परिसर में निर्माण कार्य : संस्थान-परिसर में पिछले दिनों यज्ञशाला-निर्माण के अलावा, ऊपरी मंज़िल पर एक कमरे का, श्री *प्रीतिपाल राजपाल* के निर्देशन में, निर्माण किया गया है। सभा-कक्ष में दो बड़े कूलर, कार्यालय-प्रखंड में एक कूलर और पेय जल के लिए ''एक्वागॉर्ड' श्रीमती *सुदर्शन चावला* ने अपने पावन दान से लगवाए हैं।

१६ विश्व पुस्तकमेला में संस्थान का स्टॉल : वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से, अरसे से, प्रति दो वर्षों में होने वाले, 'दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' में वेद-संस्थान के प्रकाशनों के विक्रय के हेतु स्टॉल लिया जाता रहा है। ५ से १३ फ़रवरी, सन् २००० में होने वाले इस मेले में स्टॉल श्री **कुँवरभानु क्षेत्रपाल** के निर्देशन में लगने को है।

१७ 'विपश्यना'-अभ्यास (रविवारीय और एकदिवसीय आयोजन): प्रत्येक रविवार को ध्यान-कक्ष में प्रातः १०.०० से ११.०० तक विपश्यना-अभ्यास होता है। अन्य दिनों में भी साधक किसी भी समय (प्रातः नौ से सायं छह बजे तक में) आकर ध्यान में बैठा करते हैं। प्रत्येक मास के चतुर्थ रविवार को पूरे दिन, दस से पांच बजे तक अभ्यास होता है। साधक अपना भोजन साथ लाते हैं। मंगल-मैत्री के पश्चात् जल-पान की व्यवस्था रहती है। वज्र-मौन का पालन होता है। चार से पांच बजे तक गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का का प्रवचन-टेप सुनाया जाता है। साधक दिल्ली से बाहर, जैसे, फ़रीदाबाद से भी आते हैं। यह आयोजन विपश्यना-शिक्षक, श्री डॉ सुभाष सेठी के निर्देशन में होता है।

१८ पालि-कक्षा : दो वर्षों से संस्थान में अनियतकालिक पालि-कक्षाएं चलाई जारही हैं। अगली बैठक की तारीख़ चालू बैठक की पूर्ति पर बता दी जाती है। विपश्यना के आचार्य, पालि-वाङ्मय के विद्वान् श्री सत्येन्द्रनाथ टंडन अध्यापन करते हैं । लगभग ३०-३५ नर-नारी इसमें नियम से और उत्साहपूर्वक आते हैं। उनकी अध्यापन-शैली अतिरोचक है। पाठ की साइक्लोस्टाइल प्रतियां हर बार अध्येताओं को दी जाती हैं। कक्षा का द्वितीय बैच आरम्भ होने को है।

१९ साप्ताहिक (महिला-)सत्संग : प्रति-मंगलवार को सायं साप्ताहिक सत्संग होता है। इसमें, भक्ति-भजन के साथ, वेदानुशीलन करने वाली महिलाएं वेदमंत्रों पर आधारित प्रवचन दिया करती हैं जिसमें सर्वश्री *कृष्णा मलहोत्रा, स्वर्ण भंडारी, सन्तोष*

कपूर, सुदर्शन चावला, शान कपूर प्रमुख हैं। संयोजिका श्रीमती *कृष्णा मलहोत्रा* हैं।

२० स्वास्थ्यकेन्द्र (रेकी, एक्यूप्रैशर और योगासन): प्रत्येक सोम, बुध और शुक्र वारों को श्री *प्रीतिपाल राजपाल* और उनके सहयोगी प्रातः ९.३० से १०.१५ बजे 'रेकी' एक्यूप्रैशर और चिकित्सा करते हैं। इनका प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इन्हीं वारों में श्रीमती *रीटा मदान* के निरीक्षण में योगासन का अभ्यास सायं ५.०० से ६.०० बजे संस्थान में होता है।

२१ वार्षिक प्रतियोगिताएँ: आशु-लेखन और आशु-भाषण : हिन्दी में आशुलेखन और आशुभाषण की प्रतियोगिताएँ शिक्षण-संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए अक्टूबर/नवंबर मास में आयोजित की जाती हैं। इसके संयोजक श्री *गंगाप्रसाद 'सुमन'* हैं।

२२ 'विदेह'-जन्मसप्ताह : संस्थान के संस्थापक और आदिम अध्यक्ष श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' की जन्म-तारीख़ १५ नवंबर है। उस तारीख़ वाले सप्ताह में संस्थान का वार्षिक आयोजन, ''यज्ञ और धर्मोपदेश' होता है। गत कुछ वर्षों से इस आयोजन में ऋग्वेद के एक-एक मंडल का क्रमशः पारायण और 'स्वाहा'-कार होम होता रहा है। अभी तक सात मंडलों के पारायण हो चुके हैं। इस सप्ताह में वेदप्रवचन भी प्रायः उस मंडल के मंत्रों पर होते हैं जिस मंडल का पारायण किया जाता है। सन् १९९९ में, स्वामी 'विदेह' के जन्म को सौ वर्ष पूरे होने के प्रसंग से, 'तपोयाग' के अलावा, उनके द्वारा रचित 'स्वस्ति-याग' और 'विजय-याग' से पारायण-होम रखा जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा सौजन्यमूर्ति श्री *विद्याव्रत*, शास्त्री होते हैं।

२३ 'विदेह'-प्रयाणदिवस : श्री स्वामी 'विदेह' ने ५ मार्च, १९७८ को रात्रि का अपना वेदोपदेशं देने के पश्चात्, प्रवचनमंच पर ही, सारी जनता के समक्ष अपने प्राणं त्यागे थे। वे कहा भी करते थे कि 'मैं वेदोपदेश देते हुए प्राण त्यागूंगा' और वैसा ही उन्होंने किंया। प्रतिवर्ष पांच मार्च वाले सप्ताह में यज्ञ और वेदप्रवचन का आयोजन किया जाता है।

२४ पौरोहित्य : यज्ञ और वेदप्रवचन के लिए प्राप्त होने वाले आमंत्रणों का निर्वाह श्रीमती *कृष्णा मलहोत्रा* करती हैं। उनकी प्रवचनशैली बड़ी हृदयग्राही होती है।

२५ दैनिक आयोजन : संस्थान-परिसर की यज्ञशाला में नित्य सायं-प्रातः अग्निहोत्र संस्थान में निवास करने वाले लोग करते हैं। नित्य प्रातः वेदपारायण भी १०.०० से १०-३० बजे हुआ करता है।

तात्कालिक आवश्यकताएँ

संस्थान का कार्य एक पवित्र, ईश्वरीय, अखिल मानव के मंगल की 'सेवा' है। वेद-संस्थान के वर्तमान कार्यों को तीव्र गति और तेज प्रदान करने के लिए निम्न लिखित आवश्यकताएँ तत्काल महत्त्व की हैं। दिल्ली के भौतिकता, भोगवाद और

स्वकेंद्रित वातावरण में समुचित कार्यवाहकों की सुलभता सरल नहीं रह गई है। अतः संस्थान-कार्यों के सुचारु संचालन के लिए 'समर्पण भाव' वाले दायित्ववाहक नर-नारियों से आह्वान है कि वे अपनी रुचि और सामर्थ्य के अनुरूप दायित्वचयन करें और संस्थान को तन-मन-जन का पूर्णकालिक/अंशकालिक सहयोग दें। उन्हें यथोचित पारिश्रमिक और मान संस्थान से प्राप्त होगा।

१ संस्थान-अधिष्ठाता, जो विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर सकें,
२ संस्थान-प्रकाशनों के विक्रयार्थ दो-तीन व्यक्तियों की एक टोली जो विभिन्न पुस्तक-मेलों और अन्यान्य आयोजनों में स्टॉल-संचालन करें,
३ संस्थान के कंप्युटर यंत्र पर कार्य करने हेतु देवनागरी और रोमन लिपि, दोनों में अच्छी गति से टंकण अभ्यास वाला अनुभवी ऑपरेटर जो डी टी पी, वर्डस्टार और डाटाबेस में प्रवीण हो,
४ प्रैसकॉपी संपादक,
५ हिन्दी से अंगरेज़ी में अनुवादक, जिसे संस्कृत का अच्छा ज्ञान हो; वेद में जानकारी हो तो बहतर,
६ प्रूफ़वाचक।
७ संस्कृत-वैयाकरण, वैदिक व्याकरण का ज्ञाता हो तो बहतर।

सम्पर्क-सूत्र

विभिन्न प्रयोजनों से, यथाप्रसंग सम्पर्क हेतु निम्न लिखित ब्यौरा उपयोगी रहेगा—

सम्पर्क-समय : प्रातः ११.०० से १.३० बजे, २.०० से ४.३० बजे (साप्ताहिक अवकाश, बृहस्पतिवार को छोड़कर)

दूरभाष : ५१०-२३१६ (एस टी डी कोड : ०११)

कार्यालय-सचिव : श्रीमती स्वर्ण भंडारी, एम ए, बी एड (अवकाश-प्राप्त उपाचार्या)

सयुक्त-मंत्री : श्री रवीन्द्रनाथ मलहोत्रा (अवकाश-प्राप्त मैनेजर, पंजाब नेशनल बैंक)

वेद-संस्थान के संस्थापक, श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' द्वारा निधारित कार्यशैली

शान्त हृदय से, रे साधक, तू किए जा काम अपना।।
सत्य निष्ठा से, रे साधक, तू किए जा काम अपना।।
आत्मश्रद्धा से, रे साधक, तू किए जा काम अपना।।

(अब अनुपलब्ध, '*विदेह-गीतांजलि*', गीत सं. १८ से)

दान-हेतु संकल्प लें

मासिक/त्रैमासिक/वार्षिक दान हेतु कोई राशि वेदकार्य के लिए वेद-संस्थान को अपनी श्रद्धा, सामर्थ्य के अनुसार देते रहने का संकल्प करने का आप सबसे निवेदन है। अपने संकल्प की सूचना के साथ, 'वेद-संस्थान, नई दिल्ली' के नाम प्रथम दान क्रॉस्ड ड्राफ़्ट/मनीआर्डर/नकद रूप में निम्न लिखित पते पर भेजिए :

कार्यालय-सचिव, वेद-संस्थान,
सी २२, राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली ११० ०२७

साथ ही,

कृपया संस्थान से सतत संपर्क बनाए रखिए। दिल्ली आना हो तो संस्थान पधारने का यत्न रखिए। अपने सुझाव, परामर्श देते रहिए। संस्थान को अपने सतत चिंतन में रखिए।